International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(4): 17-20
Received: 28-01-2023
Accepted: 02-03-2023

अजय कुमार गोविन्द राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अजय कुमार गोविन्द राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

अजय कुमार गोविन्द राव, डॉ. रंजना तिवारी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 96 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 96 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 960 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। शोध क्षेत्र के 79.17 प्रतिशत प्राचार्य, 65.63 प्रतिशत अभिभावक, 77.08 प्रतिशत शिक्षक व 70.31 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

कुटशब्दः सतना जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, छज्ञत्र–छात्राएँ, अभिप्रेरणा, सामाजिक स्तर

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

अभिप्रेरणा प्रक्रम में व्यक्ति की तीन क्रियाएं – देखना, सुनना एवं अनुभव करना, मूलतः सम्मिलित रहती है। इन क्रियाओं को प्रभावित करने वाले दो प्रकार के घटक हो सकते है। एक तो व्यक्ति के अन्तस में स्थित कतिपय उत्तेजक तत्व होते है। दूसरे व्यक्ति तत्कालीन वाह्य वातावरण में भी कतिपय उद्दीपक घटक विद्यमान रहते है। किसी विशिष्ट समय पर इन दोनों प्रकार के कारकों को सम्मिलित प्रभावानुसार व्यक्ति अपनी किसी परिस्थिति में देखता है, सुनता है, तथा अनुभव करता है। व्यक्ति को अपनी वर्तमान परिस्थितियों का प्रत्यक्षण उसको उत्प्रेरित करने का एक कारक हो सकता है। व्यक्ति व्यवहार को दिशा, ओज एवं निरन्तरता देने में व्यक्ति के परिस्थिति प्रत्यक्षण के अतरिक्त भी कई आन्तरिक एवं वाह्य घटक क्रियाशील रहते है।

विद्यार्थियों के अन्दर शैक्षिक अभिप्रेरणा के विकास के लिए उनके परिवार, समाज, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक मूल्य तथा शिक्षक के साथ तादात्मीयकरण आवश्यक है। यदि विद्यालय में विद्यार्थियों को दृढ़ संकल्प के साथ अभिप्रेरित किया जाता है, तो विद्यार्थी अपने शैक्षिक कार्यो को अतिशीघ्र समाप्त कर सफलता प्राप्त कर लेते है। अतः शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों के अन्दर विभिन्न उपकरण के माध्यम से ऐसी भावना से युक्त कर दें, कि विद्यार्थी में दृढ़ निश्चियता उत्पन्न हो जाये।

अभिप्रेरण करने की विधियाँ कक्षा शिक्षण में प्रेरणा का अत्यन्त महत्व है। कक्षा में पढ़ने के लिये विद्यार्थियों को निरन्तर प्रेरित किया जाना चाहिए। प्रेरणा की प्रक्रिया में वे अनेक कार्य हैं, जिसके फलस्वरूप विभिन्न छात्रों का व्यवहार भिन्न होता जाता है, जैसे–सामाजिक तथा आर्थिक अवस्थाएँ, पूर्व अनुभव, आयु तथा कक्षा का वातावरण आदि सभी तत्व प्रेरणा की प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये

जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि विद्यार्थी के अभिभावकों की शिक्षा का स्तर ऊँचा एवं अच्छा है तो वह अपने पाल्यों को भी उत्तम एवं उच्च शिक्षा के लिए अभिप्रेरित करते है तथा यही शिक्षा विद्यार्थी को समाज में उर्ध्वाधर सामाजिक गतिशीलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाः

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र सतना जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न प्राचार्य, अभिभावक, शिक्षक तथा छात्रों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण –

1. साक्षात्कार अनुसूची
2. प्रश्नावली पत्रक
3. उपलब्धि परीक्षण पत्रक आदि।

7. न्यादर्श चयन :

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों, विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 96 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 96 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 960 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) [1], अरूनीमा (1989) [2], कपिल, एच.के. (1996) [3], खुल्लर, के.के. (1988) [4], गहरवार मिथलेस सिंह (2005) [5], चतुर्वेदी, आर. सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007) [6], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021) [7], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) [8], सिंह, प्रदीप कुमार एवं सिंह, जय (2019) [9], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017) [10], श्रीवास्तव, एन. (1988) [11]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन,

रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक षिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध					
			है		नही है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	48	38	79ण्17	4	8.33	6	12.50
2.	अभिभावक	96	63	65ण्63	13	13.54	20	20.83
3.	शिक्षक	96	74	77ण्08	10	10.42	12	12.50
4.	छात्र	960	675	70ण्31	137	14.27	148	15.42
योग		1200	850	70ण्83	164	13.67	186	15.50
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 759.98$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंष 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 06–06 प्राचार्यों, कुल मिलाकर 48 प्राचार्यों, 12–12 अभिभावक व शिक्षकों कुल 96 अभिभावक व शिक्षक और इसी प्रकार 120–120 छात्र–छात्राएँ कुल 960 छात्रों से शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

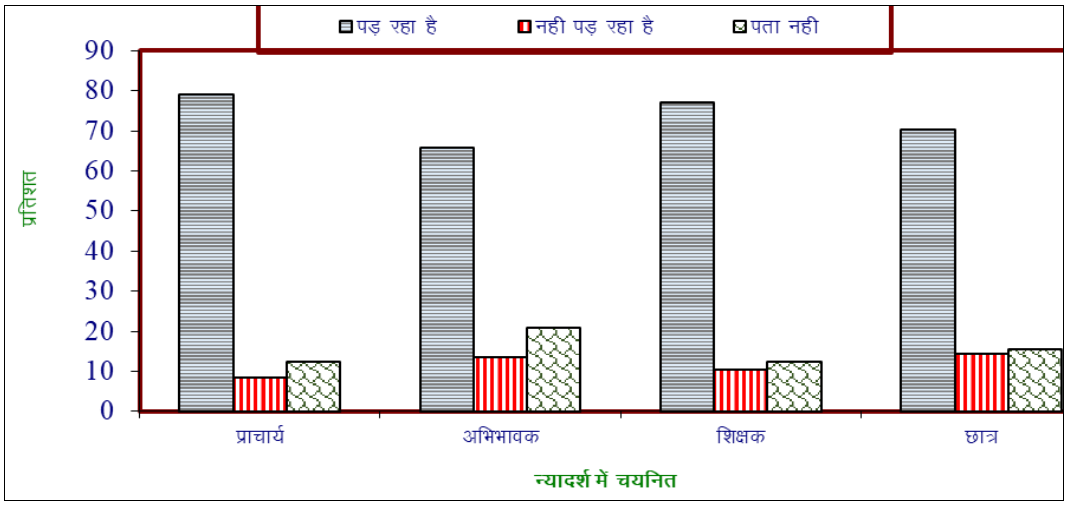

आरेख 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 79.17 प्रतिशत प्राचार्य, 65.63 प्रतिशत अभिभावक, 77.08 प्रतिशत शिक्षक व 70.31 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है।

न्यादर्श में चयनित कुल 1200 अभिमतदाताओं में से 70.83 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है, 13.67 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध नहीं है, जबकि 15.50 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 759.98 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा सम्बन्ध है। परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		480	480
मध्यमान (M)		59.29	58.35
मानक विचलन (SD)		17.35	17.55
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.83	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
$df = (480-1) + (480-1) = 479+479 = 958$

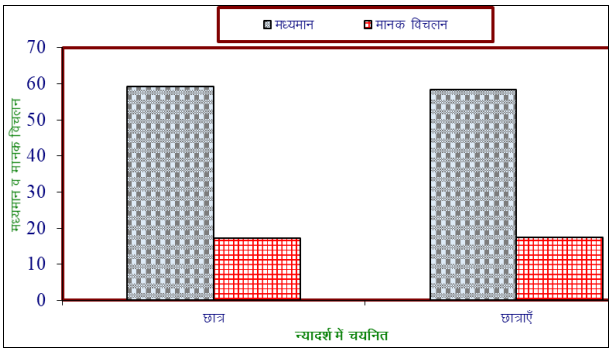

आरेख 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.29 है तथा मानक विचलन 17.35 है और माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.35 है तथा मानक विचलन 17.55 है।

958 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.83 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

न्यादर्श में चयनित कुल 1200 अभिमतदाताओं में से 70.83 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव पड़ रहा है, 13.67 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर का सीधा प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 15.50 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.29 है तथा मानक विचलन 17.35 है और माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक स्तर के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.35 है तथा मानक विचलन 17.55 है।

13. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन । मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. अरूनीमा। '' एक सामाजिक मनोविज्ञान के मूल्य निर्धारण में बच्चों के बीच आक्रामकता का अध्ययन'' Fourth Servey of Research in Education (1988-92) NCERT 1989;1:104
3. कपिल, एच.के.। सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996
4. खुल्लर, के.के.। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय, 1988
5. गहरवार मिथलेस सिंह। रीवा जिले में राजीव गांधी शिक्षा मिशन के शैक्षिक नवाचारो का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययनः अप्रकाशित शोध ग्रंथ शिक्षा, अ.प्र.सिं.वि.वि.रीवा, 2005
6. चतुर्वेदी, आर.सी. एवं मिश्रा, शिवानी। वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, Research Journal of Social and Life Sciences. 2007;2(01):195&204
7. झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार। सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
8. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी। वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., 2006;24(3):75-84.
9. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह, जय । "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Education and Research. 2017;2(2):103-106.
10. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल। "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5):79-83.
11. श्रीवास्तव, एन.। ''किशोरावस्था में लड़के व लड़कियों के आत्मबल प्राप्त, अभिप्रेरणा व नाटक प्रयोग में आक्रामकता का अध्ययन करना'' Fourth Servey of Research in Education (1988-92) NCERT. 1988;1:105.